जीवन क्या है ?

जीवन, प्यारे हार नहीं है |
मृत्यु का व्यापार नहीं है||
सुमन सौरभ से सजता जो।
वह जीवन असिधार नहीं है॥

जीवन, जीवन का अमृत है।
सृजनसार बेकार नहीं है॥
यह अंतिम अवसर जीने का।
नवलकोष सुखसार यही है॥

सौम्य सुमन की सुन्दर शैय्या।
शूलकंट के तार नहीं है।।
देव दानवों का सेतु यह
उन्नति का आधार यही है॥

यह भी एक जिंदगी

वो अपने बाप को “बुड्ढे”
यों कह कर बुलाता था ।
कभी सत्तू कभी टिक्कड़
कभी भूखा सुलाता था॥

वो जब चमचमाती कार में
बच्चों को घुमाता था।
उसके पहले बाप उसका
कार को कपड़ा लगाता था॥

बहू रोटियों साथ गालियाँ घोल के देती
कभी धक्का लगाकर जानकर घर सर पे रख लेती।
हर वक्त आँखों से यही वो पूछती रहती
बुड्ढे अब भी जिंदा हो, जल्दी क्यों नहीं मरते?

और वह बूढ़ा बाप घुटकर
तमाशा देखता रहता
लड़के को ताकता कभी
छत को घूरता रहता।

प्यार के दो बोल सुनने को
उसके कान झर गए।
एक रोज उसका पोता दौड़ता आया
बोला काका जल्दी चलो
दादू मर गए॥

रहीम की ईद

और आज ईद का मौका था
दिन याद करने का उसको जिसके लिए कहा गया है
रब्बिल-आलमीन
और छोटा रहीम दौड़कर घर में घुसा
तैयार हो रहे अब्बू की टांगो से लिपट कर बोला
"अब्बू अजान हो रही है मैं भी चलूंगा"

बाप की आंखें छलक आई
मस्जिद में आज मेरे बच्चे की पहली नमाज होगी मेरे साथ
या-अल्लाह, मॉ ने खुश होकर दोनों को जानमाज़ देकर रुखसत किया
और आज मस्जिद तो जैसे चार गुनी हो गई थी
लोगों ने एक साथ जब उसके सदके में सर झुकाया
तो जैसे सातवें आसमान से आवाज आई कुबूल है-कुबूल है

नमाज़ ख़त्म करके अपने रहीम अपने अब्बू के साथ
खड़ा हुआ ही था की
एक जोरदार धमाके ने पूरा मंजर बदल दिया
मौत का काला धुँआ जब थोड़ा सा छटा
तो वहाँ न रहीम था और ना उसके अब्बू

था तो बस चीखों का पुकारों का महासागर
नमाजियों का खून जमीन पर बहता हुआ
नफरत की नई ईबारत लिख रहा था।
झुलसी, अधजली लाशों के बू ने
मस्जिद के लोबान को भी असहाय कर दिया था।

घरों से दौड़ कर आए रिश्तेदार
अपने लोगों की लाशें ढूंढने में लगे थे।

रहीम की रोती-बिलखती माँ अपने लाडले को ढूंढ रही थी
और अचानक उसे ठोकर लगी॥

नीचे देखा तो जमीन पर एक धड़ था खून से सना
पैरों में नई चप्पल थी।
जो अब्बू ने रहीम को ईद पर खरीद कर दी थी

और तभी दूर कहीं पड़ोसी मुल्क की वादी में
एक टूटे से घर का फोन बजा
सामने से आवाज आई
मुबारक हो भाई जान
मिशन फतेह हुआ॥

मरियम का बेटा

इनको प्रभु तू माफ करना
जो कर रहे ना जानते हैं।
पिता तुझ को मानते
पर पुत्र को ना मानते हैं॥

मैं आ रहा हूँ लौट घर को
क्रूस का सिंगार करके।
पाप जितने हैं जगत के
सब स्वयं स्वीकार करके॥

यह कील जो ठोकी इन्होंने
हाथ में मेरे अभी।
उसी कर के स्पर्श से
कल मुक्ति पाएंगे सभी॥

हे पिता देखो शीश मेरे
मुकुट काँटों का सजा।
मुझे है मंजूर मालिक
जिसमें हो तेरी रजा॥

मैं प्रेम का संदेश फिर भी
बस सदा गाता रहा।
और बदले मार चाबुक की
यूँ ही खाता रहा॥

पर ये मेरे प्राण है
चाहे भले नादान है।
अंतिम समय में भी सदा
इनका रहेगा ध्यान है॥

यीशु रहे या ना रहे
मालिक ये बस हँसते रहें।
प्रेम,करुणा, क्षमा,शांती
इन में सदा बसते रहें॥

आया समय अवसान का
बस काम पूरा हो गया।
यह सोचकर मरियम का बेटा
लौट प्रभु में खो गया॥

राजघाट की कसम

एक गाल पर पड़े तमाशा
आगे दूजा गाल करें।
अन्यायी कोड़ो के आगे
पीठ क्यूँ खुद की लाल करें॥

हमने बहुत समय तक बापू
धैर्य,क्षमा दिखलाई है।
बलवान का मौन नहीं
कायरता बन आई है॥
समय कह रहा जागो वीरों
दुष्ट महल को राख करो
राजघाट की कसम तोड़ना होगी बापू माफ करो॥

कभी रेल में कभी बसों में
कभी गली में कभी महल में।
डिम डिम अंगारों का फटना
सौ करोड़ मानव के दल में॥
बहुत हो चुका बहुत समय तक
सर्प बगल में पाल चुके॥
बख्तर पहनों, विजय तिलक कर
कंटक शत्रु साफ़ करो
राजघाट की कसम तोड़ना होगी बापू माफ करो॥

बापू तुमसे प्यार है हमको
तुम आदर्श हमारे हो।
लेकिन तब जब शांति अहिंसा
सब देशों को प्यारे हो॥
गीता तेरे हाथों की कहती है

तनिक विचार करो
हे अधर्म जब युद्ध भूमि में
क्यों ना उस पर वार करो?
शत्रुपक्ष के सारे मकसद को आओ सुपुर्द-ए-खाक करो।
राजघाट की कसम तोड़ना होगी बापू माफ करो॥

हँसा उड़हु गगन की ओर॥

जावे जहँ-जहँ प्यासा पंछी
शीतल जल की ओर।
सुखा पानी, नयनन का जल
छितरा है चहुँ ओर॥
हँसा उड़हु गगन की ओर॥

कटे पंख पर मयूरा नाचे
बिनु चामड़ ढोलकिया बाजे।
बिनु कांटे सब मछलिन फसती
अचरज है घनघोर॥
हँसा उड़हु गगन की ओर॥

पैसा फूंके चुनरी वधू की
नरियल भये हैं “बोर”।
पानी नाही सराब बहे हैं
नदियाँ में बहुत जोर
हँसा उड़हु गगन की ओर॥

धरती नाही महा श्मशान है
बना काल का कौर।
जा तब आना; दिखे तुझे
जब सत्य धरा पर ठौर॥
हँसा उड़हु गगन की ओर॥

Xxxx

मेरा परिचय

मुझे लगे कौन सा संबोधन
मेरा नाम परिचय हुआ कोई।
मैं अपना अधिनायक स्वयं हूँ
अमर जीवन अमर मन हूँ॥

मैं अभय का हूँ प्रवर्तक
सत्यसिद्धि राह मेरी।
सत्य का आश्रय मरण तक
इक यही अरदास मेरी॥

अडिग हूँ, अदम्य हूँ,
हूँ क्रांति से ही मैं विवाहित।
लक्ष्य प्रति संघर्षरत हूँ
असत्य हेतु हूँ अपाहिज॥

मैं दलोबल के सामने
घुटने टिक सकता नहीं।
सूर्य सन्मुख नेत्र बंद कर लो भले
सूर्य छुप सकता नहीं॥

आपादमस्तक सत्यनिषदिक
राष्ट्र का मैं हूँ ऋणी।
विद्रोह की गोदी पला
मैं अन्य सब से उऋणी॥

छिद्रान्वेषी मैं नहीं,
मैं सत्य की अन्वेषणा।
विश्वजन को सुखी करना
यही है लोकेषणा॥

मैं मनुज का शुद्र सेवक
राष्ट्रदेवी का पुजारी।
राष्ट्र हित जलता रहूँ तो
है यही संतोष भारी॥

Xxxxxxxxx

द्वंद भरा ये देश हमारा

होठो पर मुस्काने पलती
हृदय पले तलवार।
खुद की कौन दशा की सोचे
हो पर दुःख से जब प्यार॥

रूढ़ि की रेती के निचे
दफ़न मनुज की लाश।
नागफनी के जंगल में
चंपा को करे तलाश॥

यहीं तिरस्कृत और बहिष्कृत
ईश्वर के दरवाज़े अल्ला।
चीख़े समता, हारे ममता
मौन मौत का मचता हल्ला॥
देश हमारा जुड़ता -बटता
कुछ रंगीले झंडों से।
मानवता की लाश टिकी है
गीता-कुरान के डंडो से॥

यही मचा था महासमर
जिसमे दो भाई लड़े पहले।
महाभारत फिर न हो जाये
कुछ युक्ति करो इसके पहले॥

मन के सारे भेद भुलाकर
बैठो पीपल की छाया में।
एक नूर से सब जग उपजा
वही राम की माया मे।।